शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अंतर्राष्ट्रीय सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-5.375
Vol.-3; issue-3 (July-Sept.) 2026
Page No- 10-16
©2026 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

Author's :

1. पारुल सैनी
शोध-छात्रा, दर्शनशास्त्र विभाग, गुरुकुल काँगड़ी (समविश्वविद्यालय), हरिद्वार, उत्तराखण्ड.

2. डॉ. विद्या
योग अध्यापिका, जड़ूली क्लासेस, देहरादून.

3. डॉ. बबलू वेदालंकार
असि0 प्रो0, दर्शनशास्त्र विभाग, गुरुकुल काँगड़ी (समविश्वविद्यालय), हरिद्वार, उत्तराखंड.

Corresponding Author :

पारुल सैनी
शोध-छात्रा, दर्शनशास्त्र विभाग, गुरुकुल काँगड़ी (समविश्वविद्यालय), हरिद्वार, उत्तराखण्ड.

अथर्ववेद की उपनिषदीय परंपरा का समीक्षात्मक अध्ययन

शोधसार : वेद भारतीय ज्ञान परंपरा का आधार स्तम्भ है। वैदिक वाङमय में अथर्ववेद अपना अत्यंत विशिष्ट स्थान रखता है। मानव जीवन से संबंधित भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों विषयों से यह समन्वित है। यह वेद अंगिरावंशीय अथर्वा ऋषि द्वारा दृष्ट होने के कारण अथर्ववेद के नाम से प्रसिद्ध है। अथर्ववेद का प्रमुख प्रतिपाद्य विषय ब्रह्मा का निरुपण और उसके द्वारा अभ्युदय तथा निश्रेयस की प्राप्ति है, जो ऐहिक तथा आमुष्मिक दोनों प्रकार के फलों को प्रदान करने वाली है। यद्यपि धर्म के दोनों अंग (अभ्युदय व निश्रेयस) पर वेद की समान दृष्टि होने के कारण इस वेद में "शरीरमांद्य खलु धर्मसाधनम्" अर्थात जीवन को सुखमय और दु:खरहित बनाने के लिए जिन अनेक साधनों की आवश्यकता होती है; उन साधनों की प्राप्ति के लिए अनेक प्रकार के अनुष्ठानों का विधान इस वेद में दिया गया है। वेदों के अंतिम भाग को उपनिषद (वेदान्त) कहते है। वेदांतियों ने उपनिषदो के माध्यम से वेदों के दिव्य ज्ञान कों सरलतम रुप में मानव जन तक पहुचायां।

प्रस्तुत शोध में अथर्ववेद की उपनिषदीय परंपरा का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है। जिसमें विशेष रुप से अथर्ववेदीय उपनिषद मुण्डक, माण्डूक्य तथा प्रश्नोपनिषद का विश्लेषण किया गया है। मुण्डक उपनिषद अथर्ववेद का मुख्य वेदान्त ग्रंथ है जिसमे अनुष्ठान और उच्च ज्ञान (ब्रह्म की अनुभूति) के मध्य अंतर पर केंद्रित है। इसमे प्रसिद्ध वाक्य "सत्य की ही विजय होती है"यह सिखाता है कि परम मुक्ति ध्यान, ज्ञान और गुरु के मार्गदर्शन में प्राप्त होती है। द्वितीय माण्डुक्य उपनिषद जो मुख्य उपनिषदों में सबसे छोटा है तथा इसमें केवल बारह श्लोक है जिसमें चेतना और वास्तविकता (आत्मा /ब्रह्म) के स्वरुप का गहन तथा व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। यह आत्मा को चार अवस्था – जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति तथा तुरीयावस्था के माध्यम से परिभाषित करता है, जिसमें पवित्र अक्षर ॐ को अद्वैत, परम वास्तविकता के प्रतीकात्मक सेतु के रुप में प्रयोग किया गया है। प्रश्नोपनिषद,अथर्ववेद की पिप्पलाद शाखा से संबंधित है तथा यह उपनिषद् जिज्ञासा पर आधारित है, जिसमें महर्षि पिप्पलाद और उनके

छह शिष्यों के बीच सृष्टि, प्राण, मन और आत्मा से संबंधित छह प्रश्नोंत्तर शामिल हैं। इसमें 67 मंत्रों के माध्यम से ब्रह्म, ज्ञान, प्राण की सर्वोच्चता और आत्मा के स्वरूप को समझाया गया है, जो साधक को स्थूल से सूक्ष्म चेतना की ओर ले जाता है।

विशेष शब्द : अथर्ववेद, निश्रेयस, उपनिषदीय परंपरा, अनुष्ठान।

प्रस्तावना : भारतीय दार्शनिक परंपरा में वेदों का सर्वोच्च स्थान है। चारों वेद – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद – भारतीय चिंतन की मूलधारा के स्रोत हैं। इनमें अथर्ववेद का स्वरूप विशिष्ट है, क्योंकि यह केवल यज्ञीय मंत्रों तक सीमित नहीं, अपितु लोकजीवन, औषधि, तंत्र-मंत्र, शांति, संरक्षण और आध्यात्मिक साधना के विविध आयामों को समाहित करता है। अथर्ववेद से संबद्ध उपनिषदों की परंपरा भारतीय अद्वैत, योग, संन्यास और ब्रह्मविद्या की समृद्ध धारा को विकसित करती है। इस शोध-पत्र का उद्देश्य अथर्ववेद की उपनिषदीय परंपरा का ऐतिहासिक, दार्शनिक और समीक्षात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करना है। श्याम सुन्दर (2019) अथर्ववेद में औषध चिकित्सा, मानस चिकित्सा, अग्नि-यज्ञ-चिकित्सा, विष की चिकित्सा, स्पर्श चिकित्सा, पशु चिकित्सा एवं मन्त्र चिकित्सा आदि आयुर्वेद का स्वरूप अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण रूप से वर्णित है, जो मनुष्य को स्वस्थ बनाने में पूर्णरूप से सक्षम है। नाथ,कनौजिया, आराधना (2024) वेद भारतीय संस्कृति के साथ-साथ विश्व का सबसे श्रेष्ठतम ग्रंथ माना जाता है जिसमें योग जो हमारी पुरातन सभ्यता का अभिन्न अंग है, का वर्णन बडी कुशलता से किया गया है। वेदों में आध्यात्मिक ज्ञान, यज्ञ, उपासना, पूजा व अन्य कर्मकांड को अब आरंभ करने से पहले योग साधना का विधान है। मोक्ष प्राप्ति के लिए योग सर्वोत्तम साधन है।

अथर्ववेद को 'ब्रह्मवेद' या जीवन का वेद भी कहा जाता है। इसकी दो प्रमुख शाखाएँ – शौनकीय और पिप्पलाद अथर्ववेद से संबद्ध उपनिषदों में मुण्डक उपनिषद, माण्डूक्य उपनिषद और प्रश्न उपनिषद को विशेष महत्व प्राप्त है। ये तीनों उपनिषद भारतीय दार्शनिक चिंतन में ज्ञान, चेतना, ब्रह्मविद्या और साधना की परिपक्व अभिव्यक्ति प्रस्तुत करते हैं।

अध्ययन की आवश्यकता : माण्डूक्य और मुण्डक उपनिषद अद्वैत वेदांत के मूल आधार हैं। इनके गूढ अध्ययन से भारतीय अद्वैत परंपरा की मूल अवधारणाएँ स्पष्ट होती हैं। अथर्ववेद की उपनिषदें वैदिक कर्मप्रधान परंपरा से दार्शनिक एवं आध्यात्मिक चिंतन की ओर संक्रमण को स्पष्ट करती हैं। इस ऐतिहासिक परिवर्तन को समझने के लिए यह अध्ययन आवश्यक है। आज चेतना विश्व स्तर पर शोध का प्रमुख विषय है। माण्डूक्य उपनिषद की अवस्थाओं का विश्लेषण इस क्षेत्र में दार्शनिक आधार प्रदान कर सकता है। प्रश्नउपनिषद की संवादात्मक शैली ज्ञानार्जन की आदर्श पद्धति प्रस्तुत करती है, जो आधुनिक शिक्षा-पद्धति के लिए भी प्रेरणास्रोत हो सकती है। उपनिषद आत्मबोध, संयम और सत्य की साधना पर बल देते हैं, जो वर्तमान भौतिकतावादी युग में नैतिक संतुलन स्थापित करने में सहायक हो सकते हैं। यह अध्ययन दर्शन, मनोविज्ञान, योगशास्त्र, धर्म-अध्ययन और तुलनात्मक साहित्य के लिए समान रूप से उपयोगी है।

अध्ययन के उद्देश्य :

(1) दार्शनिक स्वरूप का विश्लेषण- अथर्ववेद की उपनिषदीय परंपरा में प्रतिपादित ब्रह्म, आत्मा, प्राण और ओंकार संबंधी सिद्धांतों का समीक्षात्मक अध्ययन करना।

(2) ज्ञान और कर्म के संबंध का परीक्षण - मुण्डक उपनिषद में वर्णित परा और अपरा विद्या के आधार पर यह स्पष्ट करना

(3) माण्डूक्य उपनिषद में वर्णित जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय अवस्थाओं का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करना।

(4) प्रश्न उपनिषद की प्रश्नोत्तर शैली के माध्यम से गुरु-शिष्य परंपरा और ज्ञानार्जन की पद्धति का विश्लेषण करना।

शोध विधि : यह शोध कार्य पूर्णतः वर्णनात्मक शोध विधि तथा दार्शनिक शोध विधि पर आधारित है। इसमें

अथर्ववेद की उपनिषदीय परंपरा का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है। जिसमें विशेष रूप से अथर्ववेदीय उपनिषद मुण्डक, माण्डूक्य तथा प्रश्नोपनिषद का विश्लेषण किया गया है।

स्रोत:- अथर्ववेदीय भाष्य, उपनिषद एवं आधुनिक योग साहित्य, शोध लेख, जर्नल।

अथर्ववेद की उपनिषदीय परंपरा का दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक गुरु-शिष्य परंपरा और ज्ञानार्जन की पद्धति का विश्लेषण निम्न है, अथर्ववेद में ब्रह्म सर्वव्यापक सर्वशक्तिमान तथा निराकार स्वरूप है। तप, ब्रह्मचर्य, वेद, अग्नि, वायु आदि पाँचोंतत्त्व सभी उसी परमात्मा की सत्ता में स्थित है। ब्रह्म ही सबका आधार है उसी में सब कुछ निहित है ।[1] ब्रह्म जगत का कर्ता और रक्षक है। ब्रह्म ने सर्वप्रथम ज्ञान अथर्वा ऋषि को दिया। ब्रह्म परमेश्वर ही इस जड-चेतनात्मक सम्पूर्ण जगत् के निमित्त और उपादान कारण हैं। उदाहरण मकड़ी अपने पेट में स्थित जाले को बाहर निकालकर फैलाती है फिर उसे निगल जाती है, उसी तरह वह परब्रह्मा परमेश्वर अपने अंदर सूक्ष्म रूप से लीन हुए जड- चेतनरूप जगत् को सृष्टि के आरंभ में विभिन्न प्रकार से उत्पन्न करके फैलाते हैं और प्रलयकाल में पुनः उसे अपनें में लीन कर लेते है। वह परब्रह्म इन्द्रियों से नहीं प्राप्त किया जा सकता क्योंकि वह इन्द्रियों का विषय नहीं है। उसे अपना कार्य करने के लिए इन्द्रियों की जरूरत भी नहीं है। वह सूक्ष्म सर्वव्यापक और एक रस है। वह जगत् का निमित्त कारण है।[2]

प्राण- अथर्ववेद में प्राण को अंगिरस कहा है प्राण जीवनीय, स्वस्थप्रद तथा रोगनिवारक होने से महौषध रूप है। यही मुख्य प्राण, अपान, व्यान, समान और उदान रूप में विभक्त होकर जीवनचर्या का कारण बन रहा है ।[3] महर्षि पिप्पलाद ने प्राण की महिमा का वर्णन किया है प्रश्न उपनिषद : जिज्ञासा और संवाद परंपरा पर आधारित है प्राण ही प्रजा को धारण करता हैं। प्राण ही प्रजा को प्रकाशित करता है, प्राण ही वरिष्ठ (सर्वश्रेष्ठ) है। ये जीव के आश्रयदाता है। सभी देवताओं मे प्राण ही सर्वश्रेष्ठ है। सभी इन्द्रियां प्राण के आश्रय में ही रहती हैं।' प्राण की उत्पत्ति आत्मा से होती है। जैसे शरीर की छाया शरीर से उत्पन्न होती है। उसी प्रकार प्राण आत्मा से प्रकट होता है। वह प्राण मन के संकल्प से शरीर में प्रवेश करता है। पंच प्राण के रूप में वह अलग- अलग कार्य रहता है। पंचमहाभूत इनको धारण करते है। मृत्युकाल में यह आत्मा के साथ ही बाहर निकलकर दूसरी योनियों में चला जाता है। जिस प्रकार सूर्य की रश्मियां सूर्य के अस्त होते ही सूर्य में सिमट जाती हैं और उसके उदित होते ही पुनः बिखर जाती हैं उसी प्रकार समस्त इन्द्रियां परमदेव मन में एकत्र हो जाती हैं। तब इस पुरुष का बोलना-चालना, देखना-सुनना, स्वाद-अस्वाद, सूंघना-स्पर्श करना आदि सभी कुछ स्थिर हो जाता है। उसकी स्थिति सोये हुए व्यक्ति-जैसी हो जाती है।"सोते समय प्राण-रूप अग्नि ही जाग्रत रहती। उसी के द्वारा अन्य सोई हुई इन्द्रियां केवल अनुभव मात्र करती हैं, जबकि वे सोई हुई होती हैं।'आत्मा सबका आधार है।[4] डॉ विश्वजीत (2024) उपनिषदों, विशेषकर माण्डूक्य उपनिषद सहित पुराने ग्रंथों में पर्सनैलिटी को चेतना की अवस्थाओं जैसे जाग्रत (जागना), स्वप्न (सपना देखना), सुषुप्ति (गहरी नींद), और तुरीय (पारलौकिक अवस्था) के आधार पर बताया गया है। ये फिलॉसफी बताती हैं कि ईगो से प्रेरित व्यवहार से ऊपर उठने से आत्म-साक्षात्कार होता है, जो परम सत्य के साथ जुड़ता है।

ओंकार - ओंकार धनुष निश्चय जीवात्मा शर (बाण) है वह ब्रह्म लक्ष्य कहा जाता है, आलस्य रहित चित्त से बींधना चाहिए।[5] में 'ॐकार' को 'अक्षरब्रह्म' परमात्मा स्वीकार किया गया है। "तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत्" मुण्डक उपनिषद में कहा गया है कि सत्य की खोज के लिए गुरु के पास जाना चाहिए। ॐ 'ओम्' अक्षर है, उस ओम् का यह सब फैलाव है। भूत वर्तमान और भविष्यत् यह सब ओंकार ही है। और जो इसके सिवा तीन काल से बाहर है, वह भी ओंकार ही है।[6] त्यागी, डॉ अल्का (2015) प्रणव और इंसानी चेतना की अवस्थाओं के साथ इसका संबंध माण्डूक्य उपनिषद में बताया गया है। बाद में, इसे वेदांत, योग और तंत्र की परंपराओं में विकसित किया गया। ॐ (एक मंत्र के रूप में) का ज्ञान स्वयं को महसूस करने के बराबर माना जाता है।

परा और अपरा विद्या - चार वेद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद तथा छः वेदाङ्ग शिक्षा, कल्प,

व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष - अपरा विद्या है और जिस विद्या से अक्षर ब्रह्म का ज्ञान हो जाये जैसे मकडी अपने शरीर से जाल उत्पन्न करती है और अपने में ही समेट लेती है उसी प्रकार यह सम्पूर्ण जगत् उस ईश्वर से ही उत्पन्न होता है और उस में ही लीन हो जाता है, वह परा विद्या है। अथर्ववेद भाष्य में विश्वनाथ विद्यालंकार कहते है, जो विद्वान ध्यान, धारणा और वेदाध्ययन के माध्यम से वाणी (वेद) के मूल कारण का ज्ञात कर लेते है, वह जान लेता है ब्रह्म ही सृष्टि का उत्पत्ति कारण और आधार है।मंत्र में ब्रह्म को तुरीय स्वरुप कहा गया है अर्थात वह परमचेतना जो जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति अवस्था से परे चौथी सूक्ष्म और आनंदमय अवस्था में स्थित है[7]।

जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय अवस्था ज्ञान बाहर की ओर प्रवाहित होता है; प्रथम अवस्था व्यक्ति 'मैं शरीर हूँ' की भावना से जुड़ा रहता है। द्वितीय अवस्था ज्योतिर्मय आत्मा अथवा अव्यक्त ब्रह्म है। इसे प्रविविक्तभुक् (सूक्ष्म विषयों का भोक्ता) कहा जाता है। तृतीय चरण 'प्राज्ञ' ही ब्रह्म का चरण है, जिसके द्वारा वह एकमात्र आनन्द का बोध कराता है। इसमें चेतोमुख होता है।

चतुर्थ चरण वह ब्रह्म ही जगत का कारणभूत है, सबका ईश्वर है, सर्वज्ञ है, अन्तर्यामी है, किन्तु जो एक मात्र अनुभवगम्य है, शान्त-रूप है, कल्याणकारी अद्वैतस्वरुप है।[8]

ए .त्रिपाठी (2025) चेतना की अवस्थाओं के संबंध में व्यक्ति और ब्रह्मांड के बीच एक रिफ्लेक्सिविटी की कल्पना करता है: "सर्वं हेतु ब्रह्म अयमात्मा ब्रह्म सोऽयमात्मा चतुष्पाद् " अर्थात् यह सब ब्रह्म है, यह आत्मा ब्रह्म है, इस आत्मा की चार अवस्थाएँ हैं। व्यक्ति की जागती हुई चेतना को वैश्वानर, सपने देखने वाली व्यक्तिगत चेतना को तैजस और सोई हुई व्यक्तिगत चेतना को प्राज्ञ कहा जाता है। इसकी चौथी अवस्था आत्मा है। जागने, सपने देखने और सोने की अवस्थाओं में संबंधित सार्वभौमिक चेतना को क्रमशः वर्त, हिरण्यगर्भ और ईश्वर कहा जाता है। इसकी चौथी अवस्था ब्रह्म है। कहता है कि आत्मा और ब्रह्म एक जैसे हैं ज्ञान की कुंजी "सर्वं ह्येतत् ब्रह्म" कथन में है अत: ब्रह्म के सभी गुण जैसे कि चार भाग होना प्रत्येक वस्तु (सर्व) में मौजूद हैं, जिसका मतलब है कि सभी वस्तुएं, अपितु पूरे ब्रह्मांड में, चार मिलते-जुलते पहलू होने चाहिए।

माण्डूक्य उपनिषद में चेतना का अद्वैत विश्लेषण मिलता है। ओम् = सम्पूर्ण ब्रह्मांड का प्रतीक यह न जाग्रत है, न स्वप्न, न सुषुप्ति अपितु सबका आधार। यही अद्वैत का शिखर है। ऋचा पाण्डेव (2025) माण्डूक्य के आलोक में सिद्धार्थ की आध्यात्मिक यात्रा में "ॐ" की भूमिका का परीक्षण करता है तथा यह प्रतिपादित करता है कि उनका आत्मज्ञान वेदान्त की अद्वैत परम्परा से घनिष्ठ रूप से संबद्ध है। यहाँ ब्रह्म अथवा आत्मा रूप में निरुपित परम-सत्ता की उपलब्धि को केवल सर्वेश्वरवादी न मानकर परावेश्वरवादी दृष्टि से समझना अधिक व्यापक है, जहाँ परम-सत्ता जगत में भी व्याप्त है और उससे परे भी स्थित है।

चेतना का अत्यंत सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषण है, ज्ञान द्वारा ही परमात्मा के इस चेतन-अचेतन स्वरूप को जाना जा सकता है। उसे वाणी से प्रकट करना अत्यन्त कठिन है। उसे अनुभव किया जा सकता है। एक आत्मज्ञानी साधक अपने आत्मज्ञान के द्वारा ही आत्मा को परब्रह्म में प्रविष्ट कराता है और उससे अद्वैत सम्बन्ध स्थापित करता है -आत्मसाक्षात्कार की अवधारणा का प्रयोग मानसिक स्वास्थ्य सुधार के लिए किया जा रहा है। इस दृष्टि से उपनिषदों का आत्म-ब्रह्म ज्ञान व्यक्तित्व-एकीकरण का प्रभावी साधन है। प्राण को उपनिषद जीवन-ऊर्जा मानते हैं, जो शरीर और मन दोनों को संचालित करती है। श्वास की गति सीधे मस्तिष्क की तरंगों, भावनाओं और हार्मोन सन्तुलन को प्रभावित करती है। तनाव हार्मोन (कॉर्टिसोल) कम होते हैं, ध्यान-क्षमता बढ़ती है जिससे चिंता और अवसाद घटते हैं, श्वास-नियमन को उपचार के रूप में अपनाया जा रहा है। यह उपनिषदों के प्राण-विज्ञान की वैज्ञानिक पुष्टि है। ओंकार को सम्पूर्ण सृष्टि की मूल ध्वनि माना गया है। यह ध्वनि चेतना को स्थिर कर मन को एकाग्र करती है। दीर्घ "ॐ" उच्चारण से मस्तिष्क की अल्फा तरंगें बढ़ती हैं, भावनात्मक उत्तेजना कम होती है,मानसिक शांति और एकाग्रता बढ़ती है। वर्तमान में ध्वनि चिकित्सा के रूप में ओंकार-जप का प्रयोग मानसिक रोगों के सहायक उपचार के रूप में किया जा रहा है ब्रह्म-आत्मा का ज्ञान व्यक्ति को अस्तित्वगत

स्थिरता देता है, प्राण का विज्ञान मन-शरीर संतुलन स्थापित करता है, ओंकार मानसिक शांति प्रदान करता है तथा जाग्रत-स्वप्न-सुषुप्ति-तुरीय अवस्थाएँ चेतना-विज्ञान का पूर्ण मानचित्र प्रस्तुत करती हैं। इस प्रकार उपनिषदों की शिक्षाएँ केवल आध्यात्मिक आदर्श नहीं, अपितु आधुनिक मनोविज्ञान, न्यूरोसाइंस और योग-चिकित्सा के लिए व्यवहारिक मार्गदर्शक सिद्ध हो रही हैं।

अध्ययन की सीमाएँ :

- यह अध्ययन मुख्यतः अथर्ववेद से संबद्ध तीन प्रमुख उपनिषदों तक सीमित है। अन्य गौण अथर्ववैदिक उपनिषदों का विस्तृत विश्लेषण इसमें सम्मिलित नहीं है।
- उपनिषदों की संस्कृत भाषा अत्यंत गूढ़ एवं दार्शनिक है, जिसके कारण अर्थ की विविध व्याख्याएँ संभव हैं। अनुवादों में भी मतभेद पाए जाते हैं।
- उपनिषदों की रचना-काल की निश्चित तिथि उपलब्ध नहीं है, जिससे ऐतिहासिक क्रम निर्धारण में कठिनाई होती है।
- यद्यपि उपनिषद चेतना और आत्मा का विश्लेषण करते हैं, परंतु आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति से उनके सिद्धांतों की प्रत्यक्ष पुष्टि सीमित है।

अध्ययन की संभावनायें :

- वर्तमान शोध में निम्न बिंदुओं पर कार्य की आवश्यकता है-
- अथर्ववेद की दोनों शाखाओं का तुलनात्मक अध्ययन
- माण्डूक्य उपनिषद की चेतना-मीमांसा का वैज्ञानिक विश्लेषण
- मुण्डक उपनिषद के ज्ञान-सिद्धांत का आधुनिक शिक्षा में प्रयोग

निष्कर्ष : अथर्ववेद की उपनिषदीय परंपरा भारतीय दर्शन की उस धारा का प्रतिनिधित्व करती है, जिसने बाह्य कर्मकांड से आंतरिक आत्मबोध की ओर संक्रमण किया। मुण्डक, माण्डूक्य और प्रश्न उपनिषदों ने ब्रह्मविद्या, अद्वैत और योग की नींव को सुदृढ़ किया। समीक्षात्मक दृष्टि से यह परंपरा आध्यात्मिक उत्कर्ष का प्रतीक है, अथर्ववेद की उपनिषदीय परंपरा केवल धार्मिक ग्रंथों का भाग नहीं, अपितु मानव चेतना के विकास की सार्वकालिक यात्रा है। अथर्ववेद की उपनिषदीय परंपरा भारतीय दर्शन की उस सूक्ष्म धारा का प्रतिनिधित्व करती है, जिसमें ज्ञान, चेतना और आत्मबोध का गहन विश्लेषण मिलता है। मुण्डक उपनिषद ज्ञान की सर्वोच्चता स्थापित करता है, माण्डूक्य उपनिषद चेतना के रहस्य को उद्घाटित करता है, और प्रश्न उपनिषद जिज्ञासा की परंपरा को सुदृढ़ करता है। उपनिषदों ने वेदों की ज्ञान परंपरा को दार्शनिक गूढ़ता प्रदान करते हुए वैदिक ज्ञान को सरल, व्यवस्थित तथा अनुभवात्मक रूप में मानव जन तक प्रस्तुत किया। अतः इन उपनिषदों का समीक्षात्मक अध्ययन न केवल ऐतिहासिक और दार्शनिक दृष्टि से आवश्यक है, अपितु आधुनिक मानव के व्यावहारिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक विकास के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक है।

सन्दर्भ सूची :

1. कस्मिन्नङ्गे तपो अस्याधि तिष्ठति कस्मिन्नङ्ग ऋतमस्याध्याहितम्। क्व व्रतं क्व श्रद्धास्य तिष्ठति कस्मिन्नङ्गे सत्यमस्य प्रतिष्ठितम् ॥ का0-10-7-1 अथर्ववेद भाष्य (पण्डित क्षेमकरणदासत्रिवेदी)
2. ऊं ब्रह्मा देवानां प्रथमः संबभूव विश्वस्य कर्त्ता भुवनस्य गोप्ता। स ब्रह्मविद्यां सर्वविद्यांप्रतिष्ठामथर्वाय ज्येष्ठपुत्राय प्राह ॥ 1 ॥
   यथोर्णनाभिः सृजते गृह्णते च यथा पृथिव्यामोषधयः सम्भवन्ति। यथा सतः पुरुषात्केशलोमानि तथाऽक्षरात्सम्भवतीह विश्वम् ॥ 7 ॥
   यत्तदद्दश्यमग्राह्यमगोत्रम्वर्णमचक्षुः श्रोत्रं तदपाणिपादम्। नित्यं विभुं सर्वगतं सुसूक्ष्मं तदव्ययं तद्भूतयोनिंपरिपश्यन्ति धीराः ॥ 6 ॥ मुण्डकोपनिषद

3. आथर्वणीराङ्गिरसीर्दैवीर्मनुष्यजा उत। ओषधयः प्र जायन्ते यदा त्वं प्राण जिन्वसि ॥ का0 11-9-16 अथर्ववेद भाष्य (विश्वनाथ विद्यालंकार)
4. द्वितीय प्रश्न- प्राणस्येदं वशे सर्वं त्रिदेव यत्प्रतिष्ठितम्। मातेव पुत्रान् रक्षस्व श्रीश्रच् प्रज्ञां च विधेहि न इति ।।13।।
   चतुर्थ प्रश्न –स् विज्ञानात्मा सह देवैश्च सर्वे : प्राणा भूतानी संप्रतिष्ठान्ति यत्र। तदक्षरं वेदयेत यस्तु सोम्य स सर्वज्ञ:सर्वमेवाविवेशेति ।। 11।। प्रश्नोंपनिषद
5. प्रणवो धनुः शरो ह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते। अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत् ॥ 4 ॥ मुण्डकोपनिषद
6. ओमित्येतदक्षरमिदं सर्वं तस्योपव्याख्यानम् भूतं भवद्भविष्यदिति सर्वमोङ्कार एव। यच्चान्यत्त्रिकालातीतं, तदप्योङ्कार एव ॥1॥ माण्डुक्य उपनिषद
7. धीती वा ये अनयन्वाचो अग्रं मनसा वा येऽवदन्नृतानि। तृतीयेन ब्रह्मणा वावृधानास्तुरीयेणामन्वत नाम धेनोः ॥ का0 7 -1-1 अथर्ववेद भाष्य (विश्वनाथ विद्यालंकार)
8. जागरितस्थानो बहिःप्रज्ञः सप्ताङ्ग एकोनविंशतिमुखः स्थूलभुग्वैश्वानरः प्रथमः पादः ॥ 3॥
   स्वप्नस्थानोऽन्तःप्रज्ञः सप्ताङ्ग एकोनविंशतिमुखः प्रविविक्तभुक्, तैजसो द्वितीयः पादः ॥ 4 ॥
   यत्र सुप्तो न कञ्चन कामं कामयते, न कञ्चन स्वप्नं पश्यति तत्सुषुप्तम्। सुषुप्तस्थान एकीभूतः प्रज्ञानघन एवानन्दमयो, ह्यानन्दभुक् चेतोमुखः प्राज्ञस्तृतीयः पादः ॥ 5 ॥नान्तः प्रज्ञं न बहिः प्रज्ञं नोभयतः प्रज्ञ न प्रज्ञानघनं न प्रज्ञं नाप्रज्ञम्। अदृष्टमव्यवहार्यमग्राह्यमलक्षणम-चिन्त्यमव्यपदेश्यमेकात्म्य प्रत्ययसारम्, प्रपञ्चोपशमं शान्तं शिवमद्वैतम्, चतुर्थं मन्यन्ते स आत्मा स विज्ञेयः ॥ 7 ॥ माण्डूक्य उपनिषद

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. विद्यालंकार, प्रो० विश्वनाथ (2023) अथर्ववेद भाष्यम् आर्ष साहित्य पब्लिकेशन हरिद्वार
2. शर्मा, पंडित जयदेव (2011)अथर्ववेद संहिता भाषा भाष्य ; चौखम्भा विद्या भवन ।
3. गोयन्दका, ह. (2014). ईशादि नौ उपनिषद (33वाँ संस्करण). गीता प्रेस।
4. योगेश्वरानंद, स्व. (2015). उपनिषद-प्रकाश (5वाँ संस्करण). योग निकेतन ट्रस्ट।
5. पाठक, ज. (2018). अथर्ववेद प्रातिशाख्यम् अथवा अथर्ववेदीया चतुरध्यायिका. चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन।
6. विद्यामार्तड, वी0 वि0, (2013). अथर्ववेद भाष्यम् (आध्यात्मिक 1 सू 1-5 व्याख्या का0 1-5 प्रथम भाग) का0-5 अनु पृष्ट 403 21. व्यास भाष्य-वेदव्यास
7. रामदेव, स्वामी, (2005). प्राणायाम रहस्य , दिव्य योग मंदिर (ट्रस्ट), पृष्ट-01
8. त्रिवेदी, प0 पण्डित क्षेमकरणदास (भाष्यकार) (2017) अथर्ववेद, विजयकुमार गोविंदराम हासानन्द, का0-20,
9. *श्याम सुन्दर (2019)अथर्ववेद में वर्णित आयुर्वेद चिकित्सा के विभिन्न सोपानः एक अध्ययन Pramana Research Journal https://pramanaresearch.org/ ISSN NO: 2249-2976Volume 9, Issue 6, 2019
10. डॉ विश्वजीत (2024) HUMAN PERSONALITY IN THE MANDUKYA UPANISHAD- INTERNATIONAL JOURNAL OF PROGRESSIVE RESEARCH IN ENGINEERING MANAGEMENT AND SCIENCE (LJPREMS) Vol. 04, Issue 09, September 2024, pp: 387-399 e-ISSN: 2583-1062 Impact Factor: 5,725
11. नाथ,कनौजिया, आराधना (2024) वेदो में योग विज्ञान का स्वरुप Sangyaharan Shodh: International Peer Reviewed: Aug. 2024, Vol. 27, No.2/ISSN 2278-8166, LIFACTOR: 4.68 31

12. ए. त्रिपाठी (2025) Reflexivity in Māndukya Upaniṣad: Ontological and Epistemological Applications, education department gv of india.
13. S. Kak, The limits to machine consciousness. Journal of Artificial Intelligence and Consciousness https://doi.org/10.1142/S2705078521500193 9, 59-72. (2022).
14. S. Kak, No-Go Theorems on Machine Consciousness. (2023). TechRxiv. https://doi.org/10.36227/techrxiv.22580872.v1
15. S. Kak, Representation and reasoning in Vedanta. Studia Humana 12 (3), 15-23 (2023). https://doi.org/10.2478/sh-2023-0012
16. त्यागी, डॉ अल्का (2015) Full span of human consciousness: readings and practices from Mandukya Upanishad, Yoga Sūtra, and the Vijñānabhairava TantraISSN: 2394-7519 IJSR 2015: 1(2): 94-97 ©2015 IJSR www.anantanjournal.com
17. Richa Pande(2025) The Mandukya Upanishad and Siddhartha: OM as the Path to the Self Journal of East-West Thought ISSN: 2168-2259 (online) (https://jetjournal.us/) Volume 15, Issue 1 – 2025
18. Goyandka, H. (2014). Mundakopanishad (Tika). Gita Press.
19. Nikhilananda, S. (Trans.). (1949). The Mandukya Upanishad with Gaudapada's Karika and Shankara's Commentary. Sri Ramakrishna Advaita Ashrama.
20. Gambhirananda, S. (Trans.). (2010). Eight Upanishads: With the Commentary of Sankaracarya (Vol. 2). Advaita Ashrama.
21. Eswaran, E. (2007). The Upanishads. Nilgiri Press.
22. Saraswati, S. D. (2020). Prashnopanishad Bhashyam. Arsh Sahitya Prachar Trust.
23. https://www.ssbyneducation.com
24. https://shodhganga.inflibnet.ac.in
25. https://vedicscriptures.in/

•